ग्रीष्मकालीन शिविर
रचनात्मक गतिविधियों के आयोजन का अनुभव

उमेश चमोला*

विद्यालयी शिक्षा के दौरान ग्रीष्मकालीन अवकाश को लेकर विद्यार्थियों में विशेष उत्साह पाया जाता है। इस अवकाश के रचनात्मक उपयोग के लिए विभिन्न संस्थाएँ विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन करती हैं। इन ग्रीष्मकालीन शिविरों में भाषा से संबंधित कई रचनात्मक गतिविधियाँ, जैसे— चित्रात्मक संवाद, फ़्लैश कार्ड के माध्यम से कहानी को लिखना, चित्रकथा के माध्यम से कहानी को लिखना, अधूरी कहानी को पूरा करना, कहानी को गीत के रूप में प्रस्तुत करना, दीवार पत्रिका या अपना समाचार पत्र बनाना, कविता सुनना और रचना करना, नाटक, तात्कालिक भाषण या वाद-विवाद आदि का आयोजन किया जा सकता है। इस प्रकार के आयोजन में बच्चों की कल्पना और मौलिकता को प्राथमिकता एवं सम्मान दिया जाना चाहिए। बच्चों की उम्र को ध्यान में रखते हुए इन गतिविधियों को उनकी रुचि के अनुरूप आयोजित किया जाना चाहिए। इस प्रकार की गतिविधियाँ बच्चों में बौद्धिक नीरसता को दूर करते हुए उनमें सृजनात्मकता का विकास करती हैं। इस लेख में ग्रीष्मकालीन शिविरों के दौरान आयोजित की गई विविध गतिविधियों के आयोजन से लेखक को प्राप्त हुए अनुभवों को प्रस्तुत किया गया है।

ग्रीष्मकालीन अवकाश के सदुपयोग के लिए विभिन्न संस्थाओं के द्वारा ग्रीष्मकालीन शिविरों का आयोजन किया जाता है। इन शिविरों का उद्देश्य बच्चों को रचनात्मक मंच प्रदान करना होता है। वैसे तो रचनात्मक गतिविधियाँ विद्यालयों में विषयगत शिक्षण के अंतर्गत भी की जाती हैं किंतु विद्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों में कहीं न कहीं बच्चा औपचारिकता के भाव का अनुभव करता है। वहाँ शिक्षक पर अपने विषय के पाठ्यक्रम को समयबद्ध पूरा करने का दबाव भी रहता है। इसलिए शिक्षक अपने विषय की दक्षताओं के विकास को ध्यान में रखते हुए ही विषय के पाठ्यक्रम से संबंधित गतिविधियों को संचालित करता है। ग्रीष्मकालीन शिविरों का स्वरूप अकादमिक तो होता है किंतु इनमें प्रायः ऐसी गतिविधियाँ सम्मिलित की जाती हैं, जो शैक्षणिक वर्ष में व्यापक रूप में आयोजित नहीं हो पाती हैं। ग्रीष्मकालीन शिविरों में बच्चों को उनकी रुचि के आधार पर रचनात्मक क्षेत्रों के चयन की स्वतंत्रता रहती है। बच्चे अपनी-अपनी रुचि के अनुसार ऑरिगेमी, शिल्प, चित्रकला, तैरना, संगीत, नृत्य, खेल, गायन, कठपुतली, कराटे, बिना आग के भोजन निर्माण, योग, भाषा संबंधी रचनात्मक गतिविधियों आदि में मेंटर शिक्षकों या विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में सम्मिलित होते हैं। ग्रीष्मकालीन शिविर

* *शिक्षक-प्रशिक्षक,* राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, उत्तराखंड, देहरादून 248001

के आधार पर एक ही फ़्लैश कार्ड पर अलग-अलग कहानी प्रस्तुत कर सकते हैं।

चित्रकथाओं के माध्यम से कहानी वाचन या लेखन

बच्चों को चित्रकथाओं से संबंधित ऐसी सामग्री देना, जिसमें चित्र बने हों तथा उनके नीचे रिक्त स्थान छोड़ा गया हो। इस गतिविधि में बच्चे चित्रकथाओं का अवलोकन कर कहानियाँ लिख सकते हैं या अपनी कल्पना के आधार पर कहानी का वाचन कर सकते हैं। एक चित्रकथा पर प्रत्येक बच्चे की कहानी अलग-अलग हो सकती है। साथ ही, बच्चों को उनके द्वारा लिखी गई कहानियों को साझा करने का अवसर भी देना चाहिए।

अधूरी कहानी को पूरी करना

बच्चों को लिखित रूप में कोई अधूरी कहानी देना। ऐसा करने से बच्चे अपनी कल्पनाशीलता के आधार पर कहानी पूरी कर सकेंगे। साथ ही, उन्हें यह कहानियाँ एक-दूसरे के साथ साझा करने के अवसर देने चाहिए।

प्रत्येक बच्चे द्वारा एक-एक पंक्ति बोलकर कहानी को तैयार करना

इस गतिविधि में मार्गदर्शक शिक्षक द्वारा कहानी की थीम का संकेत दिया जाता है। हर बच्चे को एक-एक वाक्य बोलकर कहानी को आगे बढ़ाने के अवसर दिए जाते हैं। इस प्रकार, यह कहानी सभी बच्चों द्वारा संयुक्त रूप से तैयार की जाती है।

बच्चों को पहले से याद कहानी एक-दूसरे के साथ साझा करना

कहानी सुनना और सुनाना बच्चों तथा बड़ों को बहुत अच्छा लगता है। इससे बच्चों में बोलने और सुनने के कौशल के विकास के साथ-साथ कहानी में आए शब्दों को भी सीखने का अवसर प्राप्त होता है। इस गतिविधि में बच्चे अपनी रुचि पर आधारित स्वयं कहानी बनाकर प्रस्तुत करते हैं।

कहानी गीत के रूप में

गीत या कविता के रूप में कहानी को सुनाना या गायन करना अत्यंत रोचक गतिविधि है। इस गतिविधि से बच्चों में कहानी के साथ-साथ गीत और कविता से संबंधित कौशलों का भी विकास होता है। इस गतिविधि से बच्चे स्वयं कहानी, कविता या गीत लिखने के लिए भी प्रेरित होते हैं। एक विधा को दूसरी विधा में मिलाना भी रचनात्मकता को बढ़ाने की दृष्टि से उपयोगी होता है। इसी बात का *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* के पृष्ठ 43 में भी बताया गया है कि, "साहित्य भी बच्चों की रचनाशीलता को बढ़ा सकता है। कोई कहानी, कविता या गीत सुनकर बच्चे भी स्वयं कुछ लिखने की दिशा में प्रवृत्त हो सकते हैं। उन्हें इसके लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे अलग-अलग रचनात्मक अभिव्यक्तियों को आपस में मिलाएँ।"

दी गई कहानी के अलग-अलग शीर्षक बताने को कहना

बच्चों को उनके द्वारा पढ़ी गई कहानी के अलग-अलग शीर्षक बताने को कहना। कहानी के केंद्रीय भाव को समझने और कहानी की विषयवस्तु को शीर्षक से जोड़ने के संबंध में विश्लेषण के कौशल को विकसित करने की दृष्टि से यह उपयोगी है।

कहानी के संदर्भ में कुछ विशेष बातें

- जब शिक्षक बच्चों को कोई कहानी सुनाते हैं या बच्चे आपस में कहानी साझा करते हैं, तब कहानी पूरी होते ही शिक्षक या मेंटर के रूप में

हम तुरंत बच्चों से प्रश्न पूछते हैं, "इस कहानी से हमें क्या सीख मिलती है?" इस प्रश्न को पूछने के पीछे शिक्षक का उद्देश्य यह जानना होता है कि बच्चों को जीवन हेतु उपयोगी सीख दिलाने में उनके द्वारा सुनाई गई कहानी कितनी सफल रही है? जैसे ही, बच्चे यह प्रश्न सुनते हैं, वे कहानी को सीख के परिप्रेक्ष्य में सोचने लगते हैं। सामान्यतः हर कहानी में सीख से संबंधित अलग-अलग बातें निकल सकती हैं। ऐसा प्रश्न बच्चों को कहानी के अन्य पक्षों के बारे में चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है। अतः *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में निहित सुझावों के अनुरूप कहानी को सृजनशीलता के संदर्भ में विश्लेषित किया जाना चाहिए।

- कहानी सुनाने के बाद जब हम बच्चों से कहानी पर आधारित कुछ प्रश्न पूछते हैं, तो प्रायः शिक्षकों द्वारा बच्चों को अपनी कल्पनाशीलता और परिवेश के अनुभव के आधार पर उत्तर देने का अवसर देना चाहिए। यह स्थिति बच्चे की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह बच्चे के रचनात्मक विचारों को बढ़ावा दे सकती है। इसलिए शिक्षक को कहानी के बारे में बच्चों द्वारा बताई गई बातों को स्वीकार करते हुए तथा परिमार्जन करते हुए सम्मान देना चाहिए।
- बच्चों को अपने परिवेश से जुड़ी पशु-पक्षी और पेड़-पौधों पर आधारित कहानियाँ सुनाई जाती हैं और उन्हें पढ़ने को भी दी जाती हैं। बच्चे इन कहानियों को रुचि के साथ पढ़ते या सुनते हैं। पंचतंत्र, हितोपदेश और अन्य लोक कथाएँ बच्चों को अच्छी लगती हैं क्योंकि इनमें उन्हें अपने परिवेश के पेड़-पौधे और जंतुओं आदि के बारे में जानकारी मिलती है। नवाचारी शिक्षक या ग्रीष्मकालीन शिविर में साहित्यिक गतिविधियों के मेंटर के रूप में शिक्षकों को बच्चों को वर्तमान समाज की परिस्थितियों पर आधारित कहानियों से भी जोड़ना चाहिए। विज्ञान कथाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। ग्रीष्मकालीन शिविर में मेंटर के रूप में इस लेख के लेखक ने एक बार बच्चों से पूछा, "नए ज़माने की कोई कहानी सुनाइए।" एक बच्चा कहानी सुनाने के लिए सहर्ष तैयार हो गया। उसने लोमड़ी और कौए की कहानी नए संदर्भों में सुनाई। उसने कहा, "जब लोमड़ी ने कौए को गीत सुनाने के लिए कहा, तो कौए ने सबसे पहले अपनी चोंच में दबाई हुई रोटी को अपने पंजे में मजबूती से पकड़ा। उसके बाद कौआ गीत सुनाने लगा।" वर्षों से प्रचलित कहानियों में वर्तमान संदर्भ के आधार पर इसी प्रकार परिवर्तन करने की आवश्यकता है।

लोक कथाएँ और बच्चे

बच्चे पीढ़ियों से अपने दादा-दादी, नाना-नानी या बड़ों से लोक कथाएँ सुनते आ रहे हैं। उन्हें लोक कथाएँ अच्छी भी लगती हैं। कुछ शिक्षाविद लोक कथाओं को बच्चों के लिए अनुपयोगी मानते हैं। उनका तर्क होता है कि लोक कथाओं में समाज में प्रचलित रीति-रिवाज और परंपराओं के साथ ही अंधविश्वास, जैसे— भूत-प्रेत, चुड़ैल आदि का वर्णन होता है। इसलिए ये अवैज्ञानिक होती हैं। विज्ञान क्रिया-कारण के सिद्धांत पर आधारित होता है। इसके अनुसार हमारे चारों ओर जो भी घटनाएँ घटित होती हैं, उनके पीछे कोई-न-कोई वैज्ञानिक कारण अवश्य होता है। लोक कथाएँ भी

क्रिया-कारण के सिद्धांत पर आधारित होती हैं। यद्यपि यहाँ क्रिया के पीछे बताया गया कारण सामान्यतः तर्क पर आधारित नहीं होता है। उदाहरण के लिए, हमारे आस-पास के पक्षी कुछ विशेष प्रकार की आवाज़ें निकालती हैं। विज्ञान के अनुसार उनकी यह विशिष्ट आवाज़ उनके स्वर यंत्र की विशिष्ट संरचना के कारण होती है। लोक कथाओं में पक्षियों के स्वरों की विशिष्टता के पीछे पिछले जन्म से संबंधित कारण दिखाया जाता है, जैसे— उत्तराखंड की लोक कथा 'काफल पाको, मिन ना चाखो' में पक्षी की विशेष आवाज़ के कारण की कल्पना की गई है कि पिछले जन्म में एक बालक की सौतेली माँ को भ्रम हो गया था कि काफल (एक प्रकार का फल) उसके सौतेले बेटे ने खा लिए थे। उसने क्रोध में आकर उस बालक को मार दिया। बालक निरपराध था। मरते समय उसके मुँह से निकला, "काफल पाको, मिन ना चाखो" अर्थात पके हुए काफल मैंने नहीं चखे थे। "वह दूसरे जन्म में एक पक्षी बन गया। पक्षी के रूप में वह आज भी काफल पाको, मिन ना चाखो" कहता रहता है। इस प्रकार किसी क्रिया के पीछे लोक कथाओं में कारण को गढ़ लिया जाता है और वह प्रायः अवैज्ञानिक होता है। इस प्रकार की कहानी पढ़ने या सुनाने के बाद शिक्षक द्वारा कहानी की वैज्ञानिकता पर बच्चों से बातचीत करना आवश्यक है। इससे बच्चों में लोक परंपराओं और विश्वास के वैज्ञानिक विश्लेषण के कौशल का विकास होगा।

अपने नाम का अर्थ लिखकर उसे चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत करना

प्रत्येक बच्चे को अपने नाम के प्रति रुचि रहती है। अतः बच्चों को अपने नाम का अर्थ लिखकर उससे संबंधित चित्र बनाना अच्छा लगता है। बच्चे इस गतिविधि में भावनात्मक रूप से जुड़कर भाग लेते हैं। जब वे इसे अपने साथियों के साथ साझा करते हैं, तो बच्चों के शब्द ज्ञान की वृद्धि होती है, जैसे— यदि किसी बच्चे का नाम मयंक है, तो वह अपने नाम का अर्थ लिखकर चाँद का चित्र बनाएगा। इससे अन्य बच्चों को भी सीख मिलेगी कि मयंक शब्द का अर्थ चाँद होता है।

दीवार पत्रिका या अपना समाचार-पत्र बनाना

दीवार पत्रिका या समाचार-पत्र बनाना रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ रिपोर्ट लेखन के कौशल के विकास की दृष्टि से उपयोगी है। मूल समाचार-पत्र के अवलोकन के आधार पर बच्चे अपने समाचार-पत्र के माध्यम से अपनी कल्पना और विचार को अभिव्यक्त करते हैं।

कविता सुनाना या गीत गायन और कविता लिखना

बच्चों में कविता समझने का प्रारंभ तुकांत शब्दों के वाचन और लेखन से होता है। बच्चों के कुछ लोकप्रिय गीत तुकांत शब्दों की समझ की दृष्टि से बहुत उपयोगी होते हैं, जैसे—

रे मामा, रे मामा, रे रे,
मैं तो गई थी बाज़ार लेने को आलू,
आलू-वालू कुछ नहीं मिला,
पीछे पड़ गया था भालू।

तुकांत शब्दों की समझ के लिए बच्चों से इस प्रकार के गीतों का समवेत स्वर में गायन कराया जा सकता है। बच्चों को इस गीत की पंक्तियाँ स्वयं बनाने के लिए भी कहा जा सकता है। मेंटर एक पंक्ति बच्चों के साथ गा सकता है और दूसरी पंक्ति बच्चों को स्वयं

पूरा करने के लिए कह सकता है, जैसे—

रे मामा, रे मामा, रे रे

इसके अतिरिक्त—

मैं तो गई थी बाज़ार लेने को ककड़ी,
ककड़ी-वकड़ी कुछ नहीं मिली,
पीछे पड़ गई .....। (इस पंक्ति को पूरा करने के लिए बच्चों को कहा जा सकता है।)

इस गीत के गायन में जो भी तुकांत शब्द आए हैं, बच्चों को उनकी सूची बनाने के लिए कहा जा सकता है। यह गतिविधि बच्चों को कविता लेखन के लिए भी प्रेरित कर सकती है।

अन्य गतिविधियाँ

कहानी, कविता और गीत के अलावा बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाने के लिए नाटक, तात्कालिक भाषण और वाद-विवाद आदि कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा सकता है। नाटक के माध्यम से जहाँ बच्चों में संवाद कौशल का विकास होता है, वहीं तात्कालिक भाषण प्रत्युतपन्न मति (प्रीजेंस ऑफ़ माइंड) के विकास के लिए उपयोगी है। वाद-विवाद कार्यक्रम बच्चों में तार्किक चिंतन और संप्रेषण कौशल बढ़ाने में सहायक है। ग्रीष्मकालीन शिविरों में पुस्तकालय का उपयोग भी संसाधन के रूप में किया जा सकता है। अवकाश के दौरान पुस्तकालय खुले रखे जाने चाहिए। *(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005,* पृष्ठ 104) अवकाश काल में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालय को संसाधन के रूप में प्रयोग करने का सुझाव *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में भी दिया गया है साथ ही, इस नीति में कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए अवकाश के दौरान विभिन्न व्यावसायिक विषयों को समझने के अवसर उपलब्ध कराने पर भी बल दिया जाता है।

निष्कर्ष

ग्रीष्मकालीन शिविर में भाषा से संबंधित कई रचनात्मक गतिविधियाँ आयोजित की जा सकती हैं। इन गतिविधियों का नियोजन इस प्रकार से होना चाहिए कि इनमें सभी बच्चे सहभागी बने। बच्चों की उम्र एवं उनकी मानसिक क्षमता के अनुरूप इन गतिविधियों के स्वरूप में परिवर्तन किया जाना आवश्यक है, जैसे— प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए जिन कहानी, कविता और नाटकों का चयन किया जाए उनकी प्रकृति सरल हो। माध्यमिक स्तर के बच्चों के लिए इनकी जटिलता का स्तर बढ़ाया जा सकता है। वाद-विवाद कार्यक्रम माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के लिए अधिक उपयोगी हो सकते हैं। बच्चों को पठन की प्रवृत्ति की ओर आकृष्ट करने के लिए अतिरिक्त सामग्री के रूप में कहानियाँ, कविता आदि उपयोगी होती हैं। बच्चों को कल्पना और मौलिकता से संबंधित महत्वपूर्ण भूमिका दी जानी चाहिए।

संदर्भ

चमोला, उमेश 2015. *उत्तराखंड की लोक कथाएँ.* अखिल ग्राफ़िक्स. बिजनौर, उत्तर प्रदेश.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति—2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.